धीरे बहे दोन रे···

रूस म बदलती सस्कृति क चित्रण का
महान्, मानवीय उपन्यास

मिखाइल शोलोखोव

अनुवादक गोपीकृष्ण 'गोपेश'

द्वितीय खण्ड



राजकमल प्रकाशन

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

मुद्रक
नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली ६

क्रम

मूल्य आठ रुपये

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

मुद्रक
नवीन प्रेस दरियागंज दिल्ली ६

क्रम

Not by the plough is our glorious earth furrowed
Our earth is furrowed by horses hoofs
And sown is our earth with the heads of Cossacks
Fair is our quiet Don with young widows
Our father the quiet Don blossoms with orphans
And the waves of the quiet Don are filled
with fathers and mothers tears

Oh thou our father the quiet Don !
Oh why dost thou our quiet Don so sludgy flow ?
How should I the quiet Don but sludgy flow !
From my depths the cold springs beat
Amid me the quiet Don the white fish leap

Old Cossack Songs

भाग ४

१

अक्तूबर १६१६। रात का समय। वर्षा और आंधी। हरा भरा जंगल। आल्डर से ढकी दलदल के किनारे खाइयाँ। सामने कँटीले तार के जाले। खाइयों मे ठंडी गीली कीचड। प्रेक्षण चौकी का गीला टीन ज़रा ज़रा चमक रहा है और यहा वहा खाइयों मे रोशनियाँ दिखाई देती हैं।

अफसरों के एक खाई के द्वार पर एक मोटा सा अफसर थोडी देर के लिए रुका। उसकी गीली उंगलियां ओवरकोट के बटनो पर फिसल रही थी। जल्दी से बटन खोलकर उसने कालर से पानी की बूदें झाडी। द्वार पर कीचड में मसली पडी घास पर अपने बूट साफ करके द्वार खोला और झुककर अन्दर चला गया।

एक छोटे से पराफीन लम्प के प्रकाश की पीली सी धारी उसके चेहरे पर चमक उठी। खुली हुई जाकिट पहन एक अफसर लकडी के थडे से उठा। अपने उलझे हुए सफेद बालो पर हाथ फेरते हुए उसने अँगडाई ली।

'वर्षा हो रही है?"

'हाँ" आनेवाले ने उत्तर दिया अपना कोट उतारा और भीगी हुई टोपी के साथ ही दरवाजे की कील पर लटकाते हुए बोला, "तुम तो यहाँ मज़े में हो। खूब गरम कर रखी है जगह।"

'हमने थोडी देर पहले यहाँ स्टोव जलाया था। मुसीबत यह है

कि धरती से पानी सीम रहा है। यह वषा तो हम यहा स निकाल-
ही दम लेगी। इसका बुरा हो। तुम्हारा क्या खयाल है बचुक ?'

हाथ रगडता हुआ बचुक झुककर स्टोव के पास बठ गया।

'यहा नीचे कुछ लकडी के तख्ते डाल लो। अपनी खाई मे हम मजे से हैं। नगे पैरा घूम सकते हैं। सब सूखा है। लिस्तनित्स वहाँ है ?

'सो रहा है। सतरी चौकिया का चक्कर लगाकर आया था। आ ही लेट गया।

'उसे जगाना ठीक रहेगा क्या ?

क्यों नही ? शतरज की एक बाजी लगाएग।

बचुक न अपनी घनी भौहा पर उगली फेरकर पानी झटका और फिर उगली पर नजर जमाकर धीरे स पुकारा, यवेनी निकोलायेविच !

क्या है ? लिस्तनित्स्की कुहनी के सहारे उठते हुए बोला।

शतरज खेलोगे ?

येवनी ने अपनी टाँगें बिस्तर से नीचे डाल दी और नरम सप हथेलिया से अपनी छाती जोर जोर स रगडने लगा।

पहली बाजी समाप्त होने वाली थी कि पाचवी स्क्वाड्रन क अफसर कप्टन काल्मीकोव और लफ्टीनेंट चूबोव अन्दर दाखिल हुए।

'नई खबर !' दहलीज के अन्दर पाँव रखते ही काल्मीको चिल्लाया, 'शायद रेजिमट को पीछे हटा लिया जाएगा।

कहा से सुना है ? सफेद बालो वाला अफसर जूनियर कप्ट मक्लोव अविश्वास स मुसकराया।

'तुम्ह विश्वास नहीं हाता, चचा प्यात्र ?

'सच तो यह है कि नही होता।

वटरी के कमाण्डर ने हम अभी अभी टेलीफोन पर बताया है तुम पूछोगे उसे कसे मालूम हुआ। तो सुनो, वह कल ही डिविजन स्टाफ से आया है।

इस वक्त तो नहान को जी चाहता है। मजा आ जाएगा। चूबोव वाला। उसकी आवाज म असीम आनन्द भरा हुआ था। उस

अपने कन्धे ऐसे थपथपाए जैसे बच की टहनी से अपने आपको कोडे मार रहा हो।

'केवल एक टब चाहिए। पानी तो यहा बहुत है।" मर्कूलोव मुसकराया।

"यहाँ बहुत नमी है, भई! बहुत ही गीली-गीली जगह है।" काल्मीकोव न लकडी की दीवारो और कीचड भरे फर्श पर निगाह दौडाते हुए शिकायत-सी की।

'हमारे पडोस मे दलदल है।"

खुदा का शुक्र करो कि दलदल मे भी तुम मौजूद तो हो। यहा ऐसे आराम से हो जसे हातिमताई के घर मे।" बचुक न बात काटते हुए कहा, 'और जिलो म तो हमले हो रह हैं। यहाँ हम हफ्ते मे केवल एक बार गोलाबारी करते हैं।"

"यहाँ कोने म पडे सडने से तो हमला करना अच्छा है।'

'कज्जाक इसलिए नही रखे जाते कि हमला मे मरवा लिए जाएँ। भाले क्यो बनते हो मकूलोव?

'तो तुम्हारे ख्याल म हम किसलिए हैं?

"समय आने पर सरकार अपनी पुरानी चाल चलेगी और हम कज्जाको की मदद से अपनी गद्दी की रक्षा करेगी।"

"अब आ गए तुम अपने दहरियेपन पर।" काल्मीकोव ने अपना हाथ लहराया।

'दहरियापन? क्या?'

'क्योकि यह है।"

'गलत बात है काल्मीकोव! तुम सचाई से आँख नही बन्द कर सकते।'

'कसी सचाई?'

'हरेक जानता है कि यह सच बात है। तुम भी क्या नही स्वीकार कर लेते इसे?'

"सावधान, सज्जनो!" चूबोव चिल्लाया। नाटकीय ढंग से मुककर बचुक की ओर इशारा करते हुए बोला, 'अब कार्नेट बचुक सोशल-

डेमोक्रेट स्वप्न-पुस्तिका पर भाष्य करेंगे।"

'विदूषक बन रहे हो क्या ?' बचुक कटाक्षपूर्वक मुसकराया और अपनी कठोर नज़रें बूबोव की आँखों पर गड़ा दीं। खैर तुम्हारी मरज़ी। हर आदमी अपना अपना काम करेगा। मैं तुमसे कह रहा हूँ कि हमने पिछले वर्ष के मध्य में युद्ध नहीं देखा। खाइयों का युद्ध शुरू होते ही कज्जाक रेजिमेंटों को सुरक्षित स्थानों पर भेज दिया गया। जब तक मौका नहीं आता उनको चुपचाप वहीं रखा जाएगा।"

'और फिर ? शतरंज समेटते हुए लिस्तनित्स्की ने पूछा।

और फिर जब मोर्चे पर असंतोष फैलेगा—और ऐसा अवश्य होगा क्योंकि भगोड़ों की बढ़ती हुई संख्या इस बात का स्पष्ट संकेत दे रही है—तो कज्जाकों को बगावतें दबाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। सरकार कज्जाकों को ऐसे रखती है जैसे हाथ में पत्थर। समय आने पर वह इस पत्थर से इन्कलाब का सिर तोड़ने की कोशिश करेगी।'

तुम अपनी कल्पना के प्रवाह में नहीं बह रहे, दोस्त ! तुम्हारी मान्यताएं कुछ निराधार-सी लगती हैं। लिस्तनित्स्की ने आक्षेप किया, पहली बात तो यह है कि होने वाली घटनाओं के बारे में पहले से कुछ कहना मुश्किल है। यह कैसे मालूम हो कि असन्तोष फैलने वाला है। लेकिन अगर यह मान लिया जाए कि मित्र शक्तियाँ जर्मनों को कुचल देंगी और युद्ध का शानदार अंत होगा, तो फिर आपके खयाल में कज्जाकों का क्या काम होगा ?

बचुक रुखाई से मुसकराया, 'यह तो खत्म होता ही नज़र नहीं आता। शानदार अंत की तो बात ही और है।

अभियान धीरे धीरे चल रहा है

यह तो और भी धीमा पड़ जाएगा।' बचुक ने उसे आश्वस्त किया।

तुम छुट्टी से कब लौटे ? काल्मीकोव ने पूछा।

दो दिन हुए।"

बचुक ने अपने होंठ सिकोड़कर धुएं का गोला बाहर निकाला और सिगरेट का टुकड़ा नीचे फेंक दिया।

"कहाँ रह छुट्टी में ?"

"पत्रोग्राद मे।"

"खूब, तो राजधानी की क्या खबर है ? आह, काश मैं भी एक हफ्ता पत्राग्राद म गुजार सकता !"

"तुम्हे वहाँ कोई मजा नही आएगा।" बचुक न कहा। वह तात-तालकर शब्द मुह से निकाल रहा था। 'खुराक की कमी है। मजदूर इलाका म भूख, असन्तोष और खलबली मची हुई है।

'इस युद्ध का अन्त अच्छा नहीं होगा। आप लोगा का क्या विचार है ?' मकूलाव न प्रश्नसूचक दृष्टि से चारा ओर देखा।

"रूस जापान की लडाई ने १९०५ के इकलाब को जन्म दिया था। यह लडाई खत्म होगी तो एक नया इन्कलाब आएगा। इकलाब ही नही, गृह युद्ध होगा।"

लिस्तनित्स्की न अनिश्चित सा इशारा किया, जसे उसका टाकना चाहता हो। फिर उठकर भौहें चढाए खाई मे इधर उधर घूमने लगा। गुस्से को दबाते हुए वह बोला, 'मैं हैरान हूँ कि हम अफसरा के अन्दर भी इस तरह के लोग हैं। उसने बचुक की तरफ इशारा किया। "मैं हैरान इसलिए हूँ कि आज तक मैं यह नहीं समझ पाया कि इसका रवैया देश और युद्ध के प्रति क्या है। कल परसा ही यह गोल मोल-सी बात कर रहा था जिसस साफ लगता था कि वह हमारी हार देखना चाहता है। क्या मैं ठीक समझा हूँ तुम्हारी बात बचुक ?"

"मैं हार जाने के हक म हूँ।

'लेकिन क्यों ? मै समझता हूँ कि तुम्हारे राजनीतिक विचार चाहे कुछ भी हों, अपने देश की पराजय चाहना तो गद्दारी है। यह किसी भी शरीफ आदमी क लिए शम की बात है।"

'याद है दूमा के सोशल-डेमोक्रेटिक सदस्यो ने सरकार के खिलाफ कैसा सघष किया था। वह भी ता पराजय की ओर ल जाने वाली बात थी।" मकूलोव बीच म बोला।

'क्या तुम उनसे सहमत हो, बचुक ? लिस्तनित्स्की ने पूछा।

मैं जब कहता हू कि मैं हार के हक मे हूँ, तो जाहिर है कि मैं

उनसे सहमत हूँ। रूस की सोशल डेमोक्रटिक लेबर पार्टी का सदस्य होते हुए दयूमा के अपने साथी पार्टी सदस्यों से भिन्न मेरे विचार हो भी नहीं सकते। मैं हैरान हूँ येवनी निकोलायेविच कि तुम इतने पढ़े लिख कर भी राजनीतिक रूप से इतने अनाड़ी हो।

'मैं तो सबसे पहले एक फौजी सिपाही हूँ और राजतन्त्र का वफादार मुझे तो सोशलिस्ट कामरेडों को देखकर चिढ़ होती है।

तुम सबसे पहले तो बुद्धू हो और फिर आत्म तुष्ट फौजी जानवर बचुक ने सोचा और मुसकान दबा ली।

फौज में आदमी की अजीब हालत होती है।' मकूलाव ने सिसियाई हुई आवाज में कहा हम सब राजनीति से अलग रहते हैं। हम लोग तो एक तरह से गाँव के बाहर के रहने वाले हैं।'

कप्तान काल्मीकोव अपने झूलते हुए गलमुच्छों को टटारता हुआ बैठा रहा। उसकी भयानक मंगोलियाई आँखें चमक रही थीं। चूबोव बिस्तर पर लेटा दीवार से लगे मकूलाव के एक चित्र को निहार रहा था। वह एक अधनंगी औरत का चित्र था जिसका चेहरा मगडेलीन जैसा था। उसके होंठों पर एक मादक और कामुक मुसकान थी और वह अपनी नंगी छातियों को देख रही थी। बाएं हाथ की दो उंगलियों से वह एक छाती को भींच रही थी। एक उंगली बड़ी सावधानी से पीछे हटाई हुई थी। *उसकी अधमुंदी आंखों के नीचे एक साया था जो उसकी आँखों के* स्निग्ध प्रकाश से नरम हो गया था। एक कंधा उठा हुआ था जिसके साथ उसकी फिसलती हुई शमीज़ अटकी हुई थी और गरदन की हड्डियों के नीचे के गड्ढों में हल्की नरम रोशनी लहरा रही थी। उसकी मुद्रा में ऐसी स्वाभाविक शान और वास्तविकता थी और वह मद्धिम रंग ऐसा अनपेक्षित सौंदर्य लिये हुए था कि चूबोव अनजाने ही मुसकरा दिया। वह चित्र की सुन्दरता में ऐसा मुग्ध हुआ कि उसने सुना ही नहीं कि क्या बहस चल रही है।

सूत्र !' अपनी आँखें वहां से हटाते हुए वह एकाएक बोल उठा।

यह शब्द बड़े गलत समय उसके मुंह से निकला क्योंकि बचुक ने उसी समय कहा था 'आप यकीन कीजिए जारशाही का नाश होगा।

लिस्तनित्स्की ने सिगरट राल की ओर एक तीखी मुसकान के साथ पहले बचुक की ओर देखा फिर बूबोव की।

'बचुक!" काल्मीकोव एकदम बोल उठा, 'जरा ठहरो लिस्तनित्स्की! बचुक, सुनो! अगर हम मान लें कि यह युद्ध गृह-युद्ध में बदल जाएगा, तो फिर? तुम राजतन्त्र को पलट दोगे। लेकिन इसके स्थान पर तुम कैसी सरकार बनाना चाहते हो?'

मजदूरों की सरकार।'

'तुम्हारा मतलब है संसद?

'उससे भी ज्यादा। बचुक मुसकराया।

'वह क्या?'

"मजदूरों की तानाशाही।'

यह तो अब समझ गए। लेकिन बुद्धिजीवी किसान इन लोगों का क्या काम रहेगा?'

किसान हमारे साथ रहेंगे। बुद्धिजीवियों का भी एक भाग हमारे साथ होगा। दूसरे हाँ, उनका तो यह हाल होगा।' जल्दी से उसने एक कागज अपने हाथ में मरोड़ा और एक ओर फेंक दिया। फिर अपने दाँत भींचकर बोला, "यह होगा उनका।'

"बहुत ऊँचे जा रहे हो लिस्तनित्स्की ने घृणा भरे स्वर में कहा।

"हम टिकेंगे भी ऊँचे ही।' बचुक ने उत्तर दिया।

'नीचे कुछ घास बिछा लो। हो सकता है कि गिर पड़ो।'

'तुम आखिर मोर्चे पर किस लिए आये और अफसर बनने की किस लिए कोशिश की? इन बातों का तुम्हारे विचारों से क्या मेल? समझ में नहीं आता। एक आदमी है जो युद्ध के खिलाफ है, इस बात के खिलाफ है कि तबाही हो, क्या कहते हैं उसके बग-प्रमुखों को? और वह अफसर है फौज में!' काल्मीकोव ने अपने बूटों को थपथपाया और खुब हँसने लगा।

"अपनी मशीनगनों से तुमने कितने जर्मन मजदूरों का खून किया है?" लिस्तनित्स्की ने पूछा।

बचुक ने अपनी जेब से कागजों का बडा सा बडल निकाला और लिस्तनित्स्की की ओर पीठ करके उनमे से कुछ ढूढने लगा। फिर मेज़ के पास जाकर वहा एक अखबार बिछा दिया। पुराना होने के कारण इसका कागज़ पीला पड चुका था। उसने अपने मजबूत हाथों से इसकी सलवटें निकाली।

"मैंने कितने जर्मन मजदूरो का खून किया है? यह एक सवाल है। मैं अपने आप इसलिए आया, क्योंकि मुझे यहा आना ही पडता। मै समझता हू कि यहा खन्दकों म मैंने जो कुछ सीखा है, यह बाद म काम आएगा बाद मे। यह सुनिये। और उसने लेनिन के य शब्द पढे—

आधुनिक सेना की मिसाल लीजिए। यह सगठन का एक अच्छा नमूना है। इस सगठन की सबसे बडी खूबी यह है कि यह लचीला है और इसम यह योग्यता है कि एक साथ लाखो लोगो मे एक ही इच्छा जागृत कर दे। आज य लाखो लोग देश के अलग अलग भागो के अन्दर अपने घरो म पडे हैं। कल को लाम लगती है तो वे सब के-सब निश्चित केन्द्रो पर एकत्र हो जाएँगे। आज वे खाइया म पडे हैं। महीनो पडे रह सकते हैं। कल को उन्ह किसी दूसरी व्यवस्था म हमला करने भेज दिया जाएगा। एक दिन वे गोलियो और छर्रों स बचकर कमाल दिखात हैं तो दूसरे दिन खुली लडाई म जादू दिखाते हैं। आज उनके अग्रिम दस्ते जमीन क नीच सुरगें बिछात हैं तो दूसरे दिन वही लोग धरती के ऊपर उडने वाला क मशविरे पर बीसियो मील आगे बढ जाते है। जब एक ही लक्ष्य क पीछे एक ही इच्छा म ओत प्रोत लाखो लोग अपना परस्पर व्यापार और काय बदल देते है अपना स्थान और कार्यविधि बदल देत हैं तथा बदलते हुए हालात और सघर्षों की जरूरतो के अनुसार अपन औज़ार और हथियार बदल दते हैं तो उसे सगठन कहते हैं।

यही बात बुर्जुआ वग क विरुद्ध मजदूर वग के सघप पर भी लागू होती है। आज इन्कलाबी हालात नही हैं

लकिन हालात स तुम्हारा क्या अभिप्राय है?' बूनोव न टोका। बचक ने उसकी ओर एस टकटकी बाधकर देखा जस अभी नीद

से उठा हो। फिर अपने माथे पर हाथ फेरते हुए सवाल को समझने की कोशिश करने लगा।

'मैंने पूछा था कि हालात' से तुम्हारा क्या मतलब है?'

'तुम्हारा सवाल मैं समझता हूँ। लेकिन मुझे समझाने में दिक्कत हो रही है।' बचुक बच्चों की तरह मुसकराया। उसके बड़े मे भावुक चेहरे पर यह मुस्कान बड़ी अजीब लग रही थी, जैसे कोई छोटा सा सफेद खरगोश हेमंत की वर्षा से भीगे खेत में से निकल गया हो। "हालात एक स्थिति होती है परिस्थितियों का एक समूह। ठीक है?"

लिस्तनित्स्की ने अनिश्चय से सिर हिलाया। 'पढ़ते चलो।"

'आज इन्कलाबी हालात नहीं हैं। वे हालात, जिनसे जनता में उभार आता है और सरगरमियाँ तेज होती हैं, आज विद्यमान नहीं हैं। आज तुम्हें बैलट पेपर दिया जाता है— इसे ले लो। संगठन करना सीखो, ताकि अपने दुश्मनों के खिलाफ इसे हथियार बना सको, इसलिए नहीं कि उन लोगों के लिए आरामदेह संसदीय स्थान लिए जा सकें जो जेल जाने के भय से अपनी कुर्सियों में चिपके रहते हैं। अगले दिन तुमसे बैलट पेपर ले लिया जाता है और तुम्हारे हाथ में एक राइफल और नवीनतम इंजीनियरिंग विधि के अनुसार तेजी से फायर करने वाली बंदूक दे दी जाती है। मौत और तबाही के इस हथियार को भी संभाल लो। युद्ध से डरने वाले भावुक लोगों की बातों पर कान मत धरो। दुनिया में बहुत-कुछ ऐसा है जिसको मजदूर वर्ग की मुक्ति प्राप्त करने के लिए आग और लोहे से तबाह करना पड़ेगा। और अगर जनता में गुस्सा और असन्तोष बढ़ जाए, अगर इन्कलाबी हालात पैदा हो जाए, तो नये संगठन बनाने के लिए तैयार रहो। मौत और तबाही के इन्हीं हथियारों का अपनी ही सरकार और अपने ही बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध इस्तेमाल करो "

दरवाजे पर दस्तक हुई और पाँचवीं स्क्वाड्रन का सार्जेंट मेजर अन्दर आ गया। बचुक रुक गया।

जनाब," वह कार्मीकाव से सम्बोधित हुआ, 'रजिमेंट

एक अदली आया है।"

कालमीकोव और श्त्रोव ने अपने ओवरकोट पहने और बाहर निकल गए। मकूलाव बैठकर चित्र बनाने लगा। लिस्तनित्स्की खाई में घूमता रहा। अपनी मूछों पर उंगली फेरते हुए वह सोच में डूबा हुआ था। थोड़ी देर के बाद बचुक भी चला गया। वह खाइयों की फिसलन और कीचड़ में से चल रहा था। बाएं हाथ से उसने कालर के कोने पकड़े हुए थे और दायें हाथ से कोट का थामे हुए था। हवा उस तंग खाई में से बह रही थी दीवारों से टकराती और सीटियां बजाती हुई। उसके चेहरे पर एक अनिश्चित मुसकान थी। वह अपनी खोह में पहुँचा तो फिर पूरी तरह भीग चुका था। उसमें सड़े हुए आल्डर के पत्तों की गंध आ रही थी। मशीनगन दस्ते का कमाण्डर सो रहा था। उसके साँवले चेहरे से उन तीन रातों की थकान साफ दिखाई देती थी जो उसने ताश में बिता दी थीं। बचुक ने अपना किट बैग टटोला। यह बैग तब से उसके पास था जब वह एक प्राइवेट था। दरवाजे के पास कागजों का ढेर लगाकर उसने उनमें आग लगा दी। अपनी जेबों में दो डिब्बे मीट और बहुत सी रिवाल्वर की गोलियाँ भरकर वह फिर बाहर निकल गया। जरा से खुले दरवाजे में से हवा अन्दर घुस आई जले हुए कागजों की सफेद राख चारों ओर बिखेर दी और लैम्प को बुझा दिया।

बचुक के जाने के बाद लिस्तनित्स्की थोड़ी देर खामोशी से इधर उधर घूमता रहा। फिर मेज के पास गया। मकूलाव अभी भी चित्र बना रहा था। उसकी पेंसिल की नोक के नीचे सफेद कागज पर बचुक का चेहरा उभर रहा था वही रूखा मुसकान लिये।

'बड़ा स्पष्ट चेहरा है। मकूलोव ने लिस्तनित्स्की की ओर घूमकर कहा।

'तो, तुम क्या सोचते हो ? येरनी ने पूछा।

'शैतान ही जानता है। मकूलोव ने प्रश्न की महत्ता को आंकते हुए उत्तर दिया। अजीब आदमी है। अब तो उसने अपना सब-कुछ बता दिया। पहले तो उसको समझना ही मुश्किल था। तुम जानते हो कि वह कज्जाकों में बहुत लोकप्रिय है विशेषकर मशीनगन चलाने

वालो मे। तुमने इस तरफ ध्यान दिया ?"

'हूँ," लिस्तनित्स्की न अस्पष्ट सा उत्तर दिया।

"मशीनगन वाले सब के सब बोलशेविक हैं। उसका वाकई उन पर असर हो रहा है। आज उसन अपना हाथ दिखाया तो म हक्का बक्का रह गया। उसन एसा क्या किया ? वह जानता है कि हममे से कोई उसके साथ सहमत नही होगा। फिर भी उसन खुलकर अपने मन की बात कह दी और वह कोई तेज मिजाज भी नही है। बडा खतरनाक है।

बचुक के विचित्र व्यवहार क बारे मे सोचते हुए मक्लोव ने चित्र का परे धकेल दिया और कपडे उतारने लगा। उसन अपनी गीली जुराबें स्टोव के ऊपर लटका दी घडी का चाबी दी और सिगरेट सुलगा-कर लेट गया। उसे एकदम नीद आ गई। मकूलोव जिस स्टूल से उठा था, लिस्तनित्स्की उस पर बैठ गया और बचुक के चित्र के दूसरी ओर अपन हाथ से लिखा—

"महामहिम,

इससे पहले जो सन्देह मैंन आपको लिखकर भेजे थे आज व सच्चे साबित हो गए। हमारी रेजिमट के अफसरो (जिनम मरे अतिरिक्त पाँचवी स्क्वाडन के कप्तन काल्मीकोव तथा लैफ्टीनेंट चूबाव और तीसरी स्क्वाडन के जूनियर कप्तन मक्लाव शामिल थे) के बीच बात करते हुए कार्नेट बचुक न स्पष्ट बताया कि वह अपने राजनीतिक विश्वास के अनुसार क्या काम कर रहा है। निस्सन्देह वह यह सब पार्टी की हिदायत पर हा कर रहा ह हालांकि मैं यह नही समझ पाया कि उसने खुल्लम-खुल्ला अपन इराद क्या प्रकट किए। उसके पास बहुत म कागजात थे जो गैर कानूनी प्रतीत होत है। उसन जनेवा स प्रकाशित होन वाल एक गर कानूनी अखबार 'कम्यूनिस्ट' म से कुछ पढकर सुनाया। इसम कोई शक नही कि कार्नेट बचुक हमारी रजिमट म खुफिया काम रहा है। समझना चाहिए कि वह स्वच्छा स हमारी रेजिमट म आया ही इस उद्देश्य स था। सबस पहले उसन मशीनगन चलाने वाला पर असर *डालना शुरू किया है। उनको हतोत्साह कर दिया गया है।* उसके खतरनाक असर से रजिमट के हौसल पस्त हो रहे हैं। जैसा कि मैं

विशेष विभाग को आगाह कर चुका हूँ, बहुत सी अवना की वारदातें भी हो चुकी हैं।

वह अभी अभी पत्रोग्राद में छुट्टी काटकर आया है और अपने साथ बहुत सा बागी साहित्य लाया है। अब वह अपना काम अधिक तर्जों से करेगा।

उपर्युक्त के आधार पर मैं इन नतीजा पर पहुँचा हू कि १ कार्नेट बचुक का अपराध पूरी तरह साबित हो गया है। (इस वार्तालाप में उपस्थित दूसरे अफसर शपथ लेकर इस बात का प्रमाणित कर देंगे।) २ उसकी इ कलाबी सरगरमियो को रोकने के लिए जरूरी है कि उस फौरन गिरफ्तार करके मोर्चे की फौजी अदालत के सामने लाया जाए। ३ मशीनगन दस्ता तुरत तोड दिया जाए। जो ज्यादा खतरनाक हैं उन्ह अलग कर दिया जाए और दूसरो को पीछे भेज दिया जाए या दूसरी रेजिमेटो मे बिखेर दिया जाए।

मैं आपको देश तथा राजतन्त्र की वफादारी से सेवा करने का आश्वासन दिलाता हू। इस पत्र की एक प्रति मैंने एस० टी० कोप को भेज दी है।

सैक्टर न० ७ अक्तूबर २० १९१६ कप्तन येवनी लिस्तनित्स्की'

अगले दिन सवेरे सवेरे लिस्तनित्स्की ने अपनी रिपोट अरदली के हाथ डिवीजनल स्टाफ भेज दी और नाश्ता करके खाइयो की ओर चला गया। खाइ के फिसलन भरे किनारो से दूर दलदल के ऊपर धुध फली हुई थी। यह ऐसे तार तार हो रही थी जसे कँटीले तारो के जालो म उलझ गई हो। खाइ के तल पर पतले कीचड की एक इच मोटी परत थी। दीवारो से भूरी भूरी नदियाँ बह रही थीं। गीले कीचड भरे बरानकोट पहने कज्जाक किनारे की टीन पर चाय की केतलियाँ उबाल रहे थे। राइफलें खाई की दीवार के साथ टिकाकर वे एडियों के बल बैठ गए और धुआँ उडाने लगे।

तुम लोगो को कितनी बार कहा गया है कि टीनो पर आग न जलाया करो ? तुम्हारी समझ म नही आता सूअर कहीं के ? कज्जाकों की पहली ही टोली के पास आकर लिस्तनित्स्की चिल्लाया।

उनमें से दो तो अनमने से वहाँ से उठ गए। बाकी बैठे धुआँ उड़ाते रहे। उन्होंने अपने बरानकोटों के सिर अपने नीचे खींच रखे थे। एक साँवला दढ़ियल कज्ज़ाक, जिसके कान में चाँदी के कुण्डल लटक रहे थे, कनली के नीचे सूखी घास भाकते हुए बोला, "हम तो खुशी से टीनों के बिना गुजर करने को तयार हैं। लेकिन, जनाब, आग कैसे जलेगी? कीचड़ तो देखिये।

"वह टीन फौरन निकालो।"

"क्या, हम लोग यहाँ भूखे बैठेंगे? आप यह चाहते हैं क्या?" चेचक के दागों वाले एक कज्ज़ाक ने पूछा। वह गुस्से में था लेकिन उसने आँख उठाकर अफ़सर का चेहरा नहीं देखा।

मैं कहता हूँ कि वह टीन निकालो।' बूट की ठोकर से येवनी ने केतली के नीचे सुलग रही घास को दूर फेंक दिया।

क्रोध और आश्चर्य से मुस्कराते हुए दढ़ियल कज्ज़ाक ने केतली का पानी गिरा दिया और बड़बड़ाया, 'चाय पी ली लड़को "

कप्तान आगे गया तो कज्ज़ाक खामोशी से उसको नज़रें जमाए देखते रहे। दढ़ियल कज्ज़ाक की आँखों में छोटे छोटे शोले लहक रहे थे।

'दम्भी हरामजादा!"

एक और कज्ज़ाक ने लम्बी आह भरी और अपनी राइफल कन्धे से लटका ली।

पहले टप के क्षेत्र में लिस्तनित्स्की के पीछे मर्कूलोव पहुँच गया। उसकी साँस फूली हुई थी और चमड़े की नई जर्किन चरमरा रही थी। मुँह से देसी तम्बाकू की गन्ध आ रही थी। येवनी को एक ओर ले जाकर उसने जल्दी से कहा, 'सुना है कुछ? बचुक कल रात को भाग गया।"

'बचुक? क्या था?"

"भाग गया समझे? मशीनगन दस्ते के कमाण्डर ने, जो उसी खाई में रहता है मुझे बताया कि कल रात हमसे मिलने के बाद वह लौटा नहीं। इसका मतलब है कि वह हमारी खाई से निकलते ही भाग गया होगा। कैसी रही?"

लिस्तनित्स्की अपने चश्मे के शीशे को साफ करता और त्योरियाँ बदलता खड़ा रहा।

'तुम तो घबरा गए लगते हो।' मक्लोव उसके चेहरे पर कुछ ढूढने लगा।

मैं ? पागल हो गए हो ? मैं क्या घबराऊंगा ? मैं तो अचानक यह खबर सुनकर हैरान हो गया था।

२

अगले दिन सवेरे ही सार्जेंट मेजर लिस्तनित्स्की की खाई मे आया। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड रही थी। इधर उधर की बातें करने के बाद उसने बतलाया 'जनाब आज सवेरे कज्जाकों की अपनी खाइयों मे ये पर्चे मिले। जरा अजीब-सा मामला है मैंने सोचा आपको इत्तला कर दू

'कैसे पर्चे ? अपनी जगह से उठते हुए लिस्तनित्स्की ने पूछा।

सार्जेंट ने कुछ मरोडे हुए टाइप किए पर्चे उसके हाथ मे थमा दिए। लिस्तनित्स्की ने पढा—

दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ!

साथी फौजियो,

यह कम्बख्त लडाई दो साल से चल रही है। दो साल से तुम लोग खाइयों मे सड रहे हो दूसरो के हितो की रक्षा के लिए। दो साल से सभी देशो के मजदूरो और किसानों का खून बह रहा है। लाखो लोग हताहत हुए। लाखो औरतें विधवा और बच्चे यतीम हो गए। यह नतीजा है इस खूनखराबे का। तुम लोग किस लिए लड रहे हो ? किसके हितो की रक्षा कर रहे हो ? जारशाही सरकार ने लाखो फौजियो को लडाई की आग मे झोंक दिया है, ताकि नये इलाको पर कब्जा कर सकें और वहाँ की जनता का वैसे ही दमन करें जैसे इस समय गुलाम पोलैंड और अन्य राष्ट्रो के साथ हो रहा है। दुनिया के उद्योगपति अपने कल-कारखानो की उपज बेचने के लिए मण्डियो मे साझेदारी नही कर सकते, न ही

मुनाफे म साझेदारी कर सकते हैं। इसकी बजाय ये सैनिक शक्ति स मण्डियो का बँटवारा कर रहे है। और तुम अपनी नासमझी म उनके हितो की कशमकश म खुद मौत क मुह म जा रहे हो और अपन जसे दूसरे मेहनतकशो का खून बहाते हो।

अब तुम अपने भाइयो का काफी खून बहा चुके ! मजदूरो उठो, जागो ! तुम्हारे दुश्मन आस्ट्रियन या जमन फौजी नही। वे भी वस ही धोखे का शिकार हैं जसे तुम। तुम्हारे दुश्मन हैं तुम्हारा अपना ज़ार, उद्योगपति और जमीदार। अपनी बन्दूको का मुह उनकी तरफ कर दो। जमन और आस्ट्रियन फौजियो म भाईचारा बनाओ। तुम्हारे इद गिद तारो के जाल हैं जस कि तुम जानवर हो। इन तारो क पार हाथ बढाकर एक दूसरे से हाथ मिलाओ। तुम मेहनतकश भाई हो। तुम्हार हाथो पर अब भी मशक्कत के एनी छाले हैं। क्या है तुम्हारे पास जो तुम बाँट सकते हो ? स्वेच्छाचार मुर्दाबाद ! साम्राज्यवादी जग मुर्दाबाद ! दुनिया भर के मजदूरो की एकता ज़िन्दाबाद !!

पर्चा पढते पढते लिस्तनित्स्की का पारा चढता गया। 'शुरू हो गया !' उसन सोचा। एक अर्थहीन घृणा ने उसक सोच को जकड लिया और उसके मन के भाव उमडने लग। इस बात की सूचना उसन तुरन्त टैलीफोन द्वारा रेजिमेण्टल कमाण्डर को कर दी।

'इस बारे म आपका क्या हुक्म है, महामहिम ?' उसने पूछा।

"सार्जेंट मेजर और ट्रूप अफसरो को लेकर एकदम तलाशी लो। सबकी तलाशी लो। अफसरो की भी। आज मैं डिवीजनल स्टाफ से पूछूंगा कि व रेजिमेंट को कब पीछे हटा रहे हैं। जल्दी करवाऊँगा। तलाशी म कुछ मिले तो फौरन इत्तला दो।"

मेरे खयाल म यह मशीनगन वालो का काम है।'

"अच्छा ! मैं अभी कमाण्डर को हुक्म दूगा कि मशीनगनवालो की तलाशी ले।

अफसरो को अपनी खाई म बुलाकर लिस्तनित्स्की ने रेजिमेंटल कमाण्डर का हुक्म सुनाया।

'कितनी भद्दी बात है !' मकूलोव ने गुस्से से कहा, 'क्या हम लोग एक-दूसरे की तलाशी लेंगे ?'

"सबसे पहले तुम्हारी बारी लिस्तनित्स्की ! एक नौजवान लफ्टीनेंट बोला ।

'नहीं इसके लिए लाट्री पड़ेगी ।'

वर्णमाला के अनुसार ।

मज़ाक की बात अलग है ' लिस्तनित्स्की ने बीच में टोककर कहा, 'लेकिन इसमें शक नहीं कि बूढ़े की यह हिमाकत हद से गुजर गई है । हमारी रेजिमेंट के अफसर सीज़र की पत्नी की तरह पवित्र है । सिर्फ एक कार्नेट बचुक था, लेकिन वह फौज छोड़कर भाग गया । फिर भी हम कज्ज़ाकों की तलाशी ज़रूर लेनी चाहिए । कोई जाकर सार्जेण्ट मेजर को बुला लाये ।'

सार्जेण्ट मेजर एक अधेड़ कज्ज़ाक था । वह सीने पर सेंट जार्ज के तीन तगमे लटकाए अन्दर दाखिल हुआ । उसने ताककर अफसरों के चेहरों की ओर देखा ।

कम्पनी में मे सन्देहजनक चरित्र के सिपाही कौन हैं ? तुम्हारी राय में ये पर्चे किसने लाकर फेंके हैं ? यवोनी ने जवाब तलब किया ।

'हमारी कम्पनी में तो ऐसा कोई भी नहीं है हुज़ूर !' उसने विश्वास-पूर्वक उत्तर दिया ।

"लेकिन ये पर्चे तो मिले है हमारे सेक्टर में ही । क्या किसी दूसरी कम्पनी के सैनिक हमारी खन्दकों में आये थे ?

"नहीं जनाब !"

'अच्छा तो हम जाकर हर जवान की तलाशी लेंगे मकूलोव ने हाथ से संकेत किया और मुड़कर दरवाजे की ओर बढ़ा ।

तलाशी शुरू हुई । कज्ज़ाकों के चेहरों पर हर किस्म के भाव थे । कुछ आश्चर्य से चकित थे कुछ डर और घबराहट से अफसरों के मुंह की ओर ताक रहे थे और कुछ ऐसे भी थे जो अफसरों को अपने तुच्छ बोरिया बिस्तर उलटते पलटते देखकर हंसी से लोटपोट हो रहे थे ।

'आप क्या तलाश कर रहे हैं ? क्या कोई चीज़ चोरी हो गई है ?

शायद हमें कहीं देरी हो।" एक तड़ चुस्त सार्जेण्ट ने कहा।

तलाशी का कोई नतीजा नहीं निकला। सिर्फ एक ही कज्जाक के ओवरकोट की जेब में पर्चे की एक मली, मुड़ी-तुड़ी प्रति मिली।

"तुमने इसको पढ़ा है?" मकूलोव ने पूछा।

'मैंने इसे सिगरेट बनाने के लिए उठाया था' कज्जाक अपनी निगाह उठाए बगैर ही मुसकराया।

'तुम मुसकरा किस बात पर रहे हो?" लिस्तनित्स्की क्रोध से चिल्लाया और तमतमाता हुआ उसकी ओर बढ़ा। बिना डंडी वाले चश्मे के नीचे उसकी आँखों की सुनहरी बरौनियाँ झपक रही थीं।

कज्जाक का चेहरा गम्भीर हो गया और उसके होठों की मुसकान जैसे आँधी में उड़कर गायब हो गई।

"माफ कीजिएगा, सरकार! लेकिन मैं तो पढ़ना नहीं जानता। मैंने यह पर्चा इसलिए उठाया था कि मेरे पास सिगरेट बनाने का कागज नहीं है। यह पर्चा जमीन पर पड़ा था, इसलिए मैंने उठा लिया।" कज्जाक ने ऊँचे, आहत और एक प्रकार से क्रुद्ध स्वर में कहा।

लिस्तनित्स्की ने जमीन पर थूका और वहाँ से लौट पड़ा। दूसरे अफसर उसके पीछे पीछे चल दिए।

दूसरे दिन रेजिमेंट को वहाँ से हटा लिया गया और उसे अगले मोर्चे से करीब दस वर्स्ट पीछे तैनात किया गया। मशीनगन टुकड़ी के दो जवानों को गिरफ्तार करके उनका कोर्ट मार्शल किया गया, कुछ को तब्दील करके दूसरे रेजिमेंटों में भेज दिया गया, और कुछ को द्वितीय कज्जाक डिवीजन की अन्य रेजिमेंटों में। कुछ दिनों के आराम से रेजिमेंट फिर ठीक संगठित शक्ल में आ गई। कज्जाकों ने शरीर मल मलकर स्नान किया, यहाँ तक कि अपनी हजामत भी बनवाई। यह उन्होंने दाढ़ी साफ करने का वह तरीका इस्तेमाल नहीं किया जो ... दस्तों में करते थे, यानी दाढ़ी में आग लगा लेते थे और जैसे ही गालों को आँच लगती, गीले तौलिये से मुँह और जले बालों को पोछ लेते। जब से एक फौजी हज्जाम ने एक जवान से कहा था, "क्या तुम्हें एक सूअर की तरह झुलस दूँ या और तरह हजामत बनाऊँ?" तब से इ...

तरीके का नाम सूअर को भुनसाना पड गया।

रनिमण्ट ने आराम किया और कज्जाक ऊपर से काफी खुश और अच्छी व्यवस्था म नजर आते थ। लकिन लिस्तनित्स्की और दूसर अफसरो को मालूम था कि नवम्बर क बुधवार दिन का तरह उनका यह मूड भी दिखावटी ही था। मोर्चे पर वापस जाने की जसे ही रेजिमे ट म अफवाह फलती उनका यह भाव बदल जाता और उनम असन्तोष थकान और एक उदासीनता भरा आक्रोश उभरकर ऊपर आ जाता। एक मर्मान्तक श्रान्ति और थकान जाहिर होन लगती जो उनमे नतिक असन्तुलन और विरक्ति भर देती। लिस्तनित्स्की जानता था कि ऐस मूड म भरा मनुष्य जब किसी उद्देश्य को सामने रखकर सघष करता है तब वह कितना खतरनाक हो जाता है।

सन् १९१८ म उसने एक कम्पनी के जवानो को देखा था जिन्ह पाच बार आक्रमण क लिए भेजा गया था। हर बार उन्ह भयकर नुकसान उठाना पडता था फिर भी उन्ह बार-बार आक्रमण करने का आदेश दिया जाता था। कम्पनी के बचे-खुचे जवान आखिरकार आदेशो की परवाह न कर मोर्चे से लौट पडे और सना की पिछली पक्तियो की तरफ मार्च करते हुए चल गये। लिस्तनित्स्की के दस्ते को उन्ह रोकने का हुक्म दिया गया और जब उसके सिपाहियो न एक पक्ति म फलकर उनको रोकने की कोशिश की तो उन जवानो न फायर करना शुरू कर दिया। उनकी तादाद साठ स ज्यादा नही थी लकिन लिस्तनित्स्की ने देखा था कि इन साठ जवानो न कितनी बहादुरी से जान पर खेलकर अपनी आत्मरक्षा करने की कोशिश की थी और कज्जाको की तलवारो से अपने शीश कटवाते हुए मौत की गोद म बढते आये थ। उन्ह इस बात की परवाह नही थी कि उनकी मौत किसके हाथो हो रही थी।

इस घटना की याद ने उसे विचलित कर दिया और लिस्तनित्स्की ने एक बार फिर कज्जाको क चेहरो का उत्सुकतापूवक अध्ययन किया। वह आश्चय करने लगा कि कही य लोग भी एक दिन पलटकर पीछ न हटने लगें और मृत्यु क अलावा और कोई ताकत उन्ह युद्ध क्षत्र छोडकर जाने से न रोक सक। और जब वह उनकी थकी, क्षुब्ध निगाहो का

अध्ययन कर रहा था, तब उसे महसूस हुआ कि वे भी ऐसा ही करेंगे।

युद्ध के आरम्भिक दिनों की अपेक्षा कज्जाकों में काफी परिवर्तन आ गया था। उनके गीत भी अब नये थे और उनमें एक गम्भीर अनुत्साह व्यक्त होता था। वह जब उस फैक्टरी के विशाल शेड के पास से गुजरता, जहाँ उसका फौजी दस्ता ठहरा था, उसे अक्सर एक हसरत और दर्द से भरे गीत की तान सुनाई देती। लिस्तनित्स्की ठहरकर सुनने लगता और गीत में व्यक्त सरल वेदना उसकी आत्मा को झकझोर देती। हृदय की बढ़ती हुई गति के साथ उसने अन्दर एक तार जैसे कसता जाता और गायक के मद्धिम स्वर की लहरियाँ जैसे उस तार को जोर से छेड़कर उसमें एक पीड़ाजनक झंकार पैदा कर देतीं। लिस्तनित्स्की कुछ दूर खड़ा होकर गिर्जा की उदास शाम के धुंधलके में निर्निमेष ताकता रहता और उसकी आँखें आँसुओं से तर हो जातीं।

रेजिमेंट के आराम के इतने सारे दिनों में लिस्तनित्स्की ने सिर्फ एक बार ही कज्जाकों के एक पुराने वीररस के गीत के शब्द सुने थे। वह शाम की सैर से वापस आ रहा था और जब वह शेड के पास पहुँचा तो उसे कहकहों और शराब के नशे में चूर आवाजों का शोर सुनाई दिया। वह भाँप गया कि क्वार्टर मास्टर सार्जेण्ट, जो रसद लेने के लिए पड़ोस के नगर में गया था, शायद अपने साथ चोर-बाजार में बिकने वाली शराब की बोतलें लाया होगा और उससे कज्जाकों का मनोरंजन कर रहा होगा, और अब वे सब नशे में किसी बात पर हँस और झगड़ रहे होंगे। कुछ दूर से ही उसे उनकी विक्षिप्त सीटियों की वातावरण को चीरने वाली आवाज और गीत की शक्तिशाली तान सुनाई पड़ने लगी थी। एक लम्बी, काँपती हुई सीटी चक्करदार आरोहण करती हुई ऊपर को उठी थी और फिर करीब तीस कण्ठों के गर्जन में जैसे घुटकर मर गई थी। निश्चय ही कोई नौजवान कज्जाक लड़ी के फर्श पर नाच रहा था और रह-रहकर कानों के पर्दे फाड़ने वाली तेज सीटी बजा रहा था। उसके थिरकते हुए कदमों की आवाज गीत की सामूहिक लय में डूब गई थी।

लिस्तनित्स्की अनजाने ही मुस्करा दिया और उसने लय के साथ

कदम मिलाकर चलने की कोशिश की। मेरा तो खयाल नहीं कि घुड़सवार कज्ज़ाकों की तरह पैदल सेना के जवान भी उतनी ही तीव्रता से घर लौटने के आकांक्षी है।' उसने सोचा। लेकिन तर्क और विवेक ने प्रतिवाद किया कि पैदल सेना का जवान किसी भिन्न धातु का बना नहीं होता। फिर भी इसमें शक नहीं था कि मजबूरी से खन्दकों में बैठना कज्ज़ाकों को बहुत बुरा लग रहा था क्योंकि उनकी घुड़सवार सेना की नौकरी ही ऐसी है कि वे हर समय चलते रहने के आदी हो जाते हैं। इधर दो बरस से उन्हें खन्दकों की लड़ाई में भाग लेना पड़ा था या आगे बढ़ने की बेकार कोशिशों में समय बिताना पड़ा था। फौज की हालत पहले कभी इतनी कमज़ोर नहीं थी। उसे फिर जगाने के लिए शक्तिशाली नेतृत्व कुछ ज़ोरदार सफलताओं और एक बार हुंकार भर कर आगे बढ़ाने की ज़रूरत थी। बेशक इतिहास में ऐसे भी समय आए हैं, लम्बे और ठहरे युद्ध के काल जब सबसे विश्वस्त और अनुशासित सैनिकों का उत्साह भी ठंडा पड़ जाता है। सुवोरोव तक को ऐसा अनुभव हुआ था लेकिन कज्ज़ाक डटे रहेंगे और अगर उनकी हिम्मत टूटेगी भी तो शायद सबसे बाद में। वे अपने-आपमें एक छोटी सी कौम हैं अपनी परम्परा से लड़ाकू कौम हैं फैक्टरी के मज़दूरों और गाँव के किसानों जैसे चपरकनाती नहीं हैं।

और तभी मानो उसे इस घोल में पड़ने से बचाने के लिए एक थकी आवाज़ ने एक नया गीत शुरू किया। दूसरे कज्ज़ाकों ने भी उसमें स्वर मिलाया और लिस्तनित्स्की को एक बार फिर कज्ज़ाकों की हसरतें एक गीत में पिराई सुनाई दीं—

नौजवान अफसर ईश्वर से प्रार्थना करता है।
नौजवान कज्ज़ाक घर लौटने की माँग करता है।

आह नौजवान अफसर,
जाने दो मुझे अपने घर
जाने दो मुझे अपने घर
अपनी माँ और बाप के पास

अपनी माँ और बाप के पास,
और अपनी नौजवान पत्नी के पास।

अपनी रेजिमट छोडकर भागने के चौथे दिन की शाम को बचुक युद्ध क्षेत्र म स्थित एक बडे व्यापारी नगर मे पहुँचा। खिडकियो से रोशनियाँ चमक रही थी। पाले ने सडक क गड्ढो क पानी पर बर्फ की एक पतली परत जमा दी थी और इक्के दुक्के राहगीरो के कदमो की कच-कच दूर स ही सुनाई देती थी। रौशन सडका स बचकर बचुक पीछे की अँधेरी गलियो म स बडी चौकसी से चल रहा था। शहर म घुसने पर वह गश्त करने वाली एक फौजी टुकडी क सामने पडते पडते बचा था और अब वह भेडिय की तरह सतर्क होकर आगे बढ रहा था, घरा के बाडो क सहारे फिसलता हुआ। उसन अपना दाहिना हाथ ओवरकोट की जेब म छिपा रखा था, जो एक दिन तक सडे भूस के ढेर मे छिपे रहने के कारण बेहद गन्दा हो गया था।

शहर म एक फौजी दस्ता तैनात था। इस दस्ते की कई टुकडियाँ थी और यह जानत हुए कि कही किसी समय भी गश्त करन वाल सनिका का सामना हो सकता है, बचुक ने अपन ओवरकोट की जेब म रख रिवाल्वर की मूठ पर से अपनी पकड एक क्षण क लिए भी ढीली नही की।

शहर के पार निकलकर बचुक कुछ देर तक एक सुनसान गली म चक्कर काटता रहा। वह दरवाजो को गौर से देख रहा था और हर मामूली गरीब घर की रूपरेखा का अध्ययन कर रहा था। करीब बीस मिनट बाद वह कोने के एक गन्दे मकान की तरफ बढा। खिडकिया की एक दरार म स उसने झाँककर देखा और मन ही मन मुसकराता हुआ विश्वासपूर्वक फाटक के भीतर दाखिल हुआ। दरवाजा खटखटाने पर एक बूढी स्त्री बाहर निकली, जिसने शाल ओढ रखा था।

"क्या बोरिस इवानोविच यहाँ रहते हैं ?"

'हाँ भीतर आइये।'

बचुक जब उसके पास से गुजरकर बरामद म दाखिल हुआ तो पीछे से फाटक का खटका बन्द करन की आवाज सुनाई दी। नीचे

छतवाले एक कमरे म जहा तेल का लम्प जल रहा था, फौजी वर्दी म एक बुजुग आदमी मेज के सामने बठा था। वह उठकर खड़ा हो गया और मन्द रोशनी मे ताकत हुए उसन बचुक की तरफ अपनी बाँह फला दी और अपनी खुशी दबाकर कहा 'तुम कहा स आ रहे हो?

मोर्चे स।

'फिर?'

बचुक पहले तो हिचकिचाया फिर उसने मुसकराते हुए बुजुग की फौजी पटी उँगली क छोर से छूकर धीमे स्वर म कहा आपके पास कोई कमरा होगा?'

हाँ होगा। इधर अन्दर आओ।'

वह उसको एक इससे भी छोटे कमरे म ले गया। अधेर म उस एक कुर्सी देकर और कमरे का दरवाजा बन्द करके उसने खिड़की का पर्दा खीच दिया और पूछा "क्या तुम भाग आये हो?'

'हाँ।

वहाँ मोर्चे पर क्या हालत है?'

'सब तयार हैं।"

भरोसे क लाग हैं?'

पूरे।

बेहतर हो कि तुम अपने कपडे उतार ला तब हम बात करेंग। लाओ अपना ओवरकोट दो। तुम्ह हाथ मुह धोने क लिए मैं अभी चिलमची ला देता हूँ।

जिस समय बचुक एक हरे रग की ताबे की चिलमची म अपना मुह धो रहा था वह व धिागी बुजुग अपन महीन कढे बाला म उगलिया फेरता हुआ धीमे और थके स्वर म कह रहा था—

'इस समय व लोग हमस कही ज्यादा ताकतवर हैं। हम अपनी ताकत अपना प्रभाव बढान की जरूरत है और लगातार युद्ध के सही कारण लागा को समझाते जाना है। हमारी ताकत और हमारी सख्या बढ रही है इसका तुम्ह विश्वास होना चाहिए। जो उन्ह छोडकर भागते हैं व अनिवायत हमारे पास आ जात हैं। इसम शक नही कि

प्रौढ़ आदमी एक लड़के से ज्यादा ताकतवर होता है लेकिन जब वह बूढ़ा और शिथिल हो जाता है तो लड़का उसको चुटकी बजाते परास्त कर सकता है। और इस समय हमारा सामना बूढ़ी दुनिया के शिथिल्य से ही नहीं, बल्कि उसके लकवा ग्रस्त अंगों की अशक्तता से है।'

बचुक ने मुंह धोकर तौलिये से पोंछते हुए कहा "रेजिमेंट छोड़कर आने से पहले मैंने उन सभी अफसरों को बता दिया कि मैं क्या-क्या सोचता हूँ। यह काफी दिलचस्प बात थी, आप जानते हैं वे सर के मशीन-गन चालकों पर अपना गुस्सा तो गिरायेंगे ही, दो एक जवानों का कोर्ट-मार्शल करके सजा देंगे, लेकिन उनके पास कोई सबूत नहीं है इसलिए वे कर क्या सकते हैं? मेरा ख्याल है कि वे इन जवानों को विभिन्न टुकड़ियों में तबदील करके एक दूसरे से अलग कर देंगे और इस तरह हमारा काम आसान कर देंगे। हमारे लिए वे खुद ही विद्रोह के बीज बिखेर देंगे। उनमें से कुछ बड़े शानदार नौजवान हैं चकमक पत्थर की तरह सख्त!"

"मुझे स्तोपान का खत मिला है। उसे एक ऐसे आदमी की जरूरत है जिसे फौजी मामलों की जानकारी हो। तुम जाओगे, लेकिन तुम्हारे कागजात का क्या होगा? तुम इंतजाम कर लोगे?"

"काम क्या करना होगा?" बचुक ने पंजों के बल खड़े होकर एक कील पर तौलिया लटकाते हुए पूछा।

'जवानों को सैनिक शिक्षा देना," मजदान ने मुस्कराते हुए कहा। "क्या तुम कभी लम्बे नहीं हुए?"

'कोई जरूरत नहीं" बचुक ने उत्तर दिया। 'खास तौर पर मेरे जैसे काम में, मुझे तो मटर की फली जितना होना चाहिए, ताकि किसी की नजर न पड़ सके।

वे पौ फटने तक बातें करते रहे। एक दिन बाद, नये कपड़े और मेकअप से अपना हुलिया एकदम बदलकर तथा आरगोस्की रजिमेंट के सैनिक नं० ४४१ निकोलाई इरवातोव के कागजात लेकर, जो छाती में गोली से घायल हो जाने के कारण मोर्चे पर लौटने के काबिल नहीं रहा था, बचुक शहर से निकलकर स्टेशन की ओर चल पड़ा।

३

व्लादीमीर-वाल्हेंस्की से लेकर वोल्हनिया में कावल तक विशेष सेना का कब्ज़ा था। दरअसल विशेष सेना तेरह नम्बर की सेना थी, लेकिन चूंकि ऊँचे ग्राहदों के जनरल भी अन्धविश्वासों के शिकार थे इसलिए सेना को विशेष सेना कहा जाता था। सितम्बर १६१६ के आखिरी दिनों में इस प्रदेश में बढ़ने की योजनाएं बनाई गई थीं और तोपखाने की मदद से आगे बढ़ने का रास्ता तैयार किया गया था।

इस क्षेत्र में तोपखाने का बड़ा भारी जमाव किया गया था। नौ दिन तक जर्मन खन्दकों की दो कतारों पर अलग अलग वज़न के हज़ारों गोले बरसाये गए। बमबारी के पहले दिन ही जब गोलाबारी तेज़ हुई तो जर्मन पहली खन्दक छोड़कर पीछे हट गये। वहाँ केवल प्रेक्षक ही रहने दिए। कुछ दिन बाद उन्होंने दूसरी खन्दक भी छोड़ दी और पीछे की तीसरी खन्दक में चल गये।

दसवें दिन तुर्किस्तान के राइफल दस्ते की टुकड़ियों ने आगे बढ़ना शुरू किया। उन्होंने फ्रांसीसी फौज की तरह लहर दर-लहर हमले का तरीका अपनाया। रूसी खन्दकों में से सिपाहियों की सोलह लहरें उछल उछलकर बाहर निकलीं। भंवर की तरह चक्कर काटती हुई और टूटे हुए कंटीले तारों के भयानक ढेरों के गिर्द उबलती उफनती मानव तूफान की ये लहरें ज्वार की तरह आगे बढ़ती गई और जर्मनों की ओर से आल्डर के वृक्षों के झुलस ठूंठों और टीलों के पीछे से आग उगलती हुई बन्दूकों से गोलियों की बौछार आती रही। इस शोर के बीच कभी कभी तोप का गर्जन फूट पड़ता और हर चीज उसकी कड़क की ठोस लहर में डूब जाती और उसके साथ जर्मन मशीनगनों की क्रुद्ध चटर चटर सुनाई देती।

एक मील चौड़े क्षेत्र में क्षत विक्षत रेतीली ज़मीन की छाती पर काले गोलों के जैसे थे घड़ चल रहे थे और हमला करती सैनिकों की लहरें कभी टूट जातीं, धूल में अट जातीं और गोलों से हुए गड्ढों में से उछल उछलकर बाहर निकलतीं और फिर पेट के बल सरककर आगे बढ़तीं।

गोलों की बौछार तेज़ होती गई, फटने पर उनमें से छूटने वाली